VOL- VIII ISSUE- V MAY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

बौद्ध कालीन संचार व्यवस्था के संकल्पनात्मक प्रतिरूप का अध्ययनः वर्तमान में उपयोगिता एवं महत्व

बृजेन्द्र कुमार वर्मा
शोधार्थी,
जन संचार एवं पत्रकारिता विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ०प्र०।

प्रस्तावना –

बौद्ध धर्म एक तर्कशील व्यवस्था के तुल्य माना जाता है। बौद्ध काल में उन सभी विषयों का सृजन हुआ जो मनुष्य जीवन को प्रत्यक्ष प्रभावित कर रहे थे। स्वयं महात्मा बुद्ध ने उपदेश देने की कला को विकसित किया और यह पूरे विश्व में प्रसारित तो हुआ ही साथ ही विश्व भर को प्रभावित भी किया। जब प्रभाव की बात की जाती है तो उसमें एक तत्व महत्वपूर्ण हो जाता है, और वह है संचार, जिसे वर्तमान में और अधिक सरलता से प्रस्तुत किया गया, कि आखिर संचार कहा किसे जाता है। पहले के समय में संचार तो होता था, लेकिन इसे सैद्धान्तिक तौर पर प्रस्तुत नहीं किया जा सका, मान्यता के आधार पर अरस्तू को यह श्रय दिया गया, जिन्होंने संचार की कला का अपने लेखों में वर्णन किया। आधुनिक भारत के निर्माण में बौद्ध काल को स्वर्णिम माना जाता है। इसमें प्रमुखता से शिक्षा को जो महत्व दिया गया वह पहले के समय में कहीं परिलक्षित होता प्रतीत नहीं होता। ईसा की पांचवी शताब्दी पूर्व से ही जागरण काल का प्रारंभ हो गया और यह लगातार विकास की ओर बढ़ता गया। गौतम बुद्ध एक वैज्ञानिक के रूप में स्थापित हैं और उन्हें ज्योति पुंज भी कहा जाता है। ज्ञान प्राप्त होने के बाद उन्होंने शिक्षा और ज्ञान के प्रसार को जन्म दिया। विभिन्न सिद्धान्तों का सृजन कर उनका लगातार प्रसार करते रहे और उनके बाद उनके शिष्यों और अनुयायियों ने यह क्रम जारी रखा। बुद्ध अंत समय में भी लगातार पैदल चलकर तर्कों के माध्यम से ज्ञान का प्रकाश फैलाते रहे और दुःख और तृष्णा से दूर रहने और सुखी जीवन के संदेश संचारित करते रहे।

बुद्ध काल के १०० वर्षों बाद प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तु का आगमन हुआ जिन्होंने संचार के सबसे प्राचीन संचार प्रक्रिया की लिखित जानकारी दी। ग्रीस दार्शनिक अरस्तू ने ३०० ई०पू० अपनी किताब ''रेटह्रिक'' में संचार प्रक्रिया की जानकारी दी है। रेटह्रिक का अर्थ है 'भाषण देने की कला' अरस्तू के संचार प्रक्रिया में प्रमुख तत्वों की व्याख्या की है, जिनमें संचार प्रेषक (भेजने वाला), संदेश (भाषण), प्राप्तकर्त्ता, और प्रभाव शामिल है। ये सभी तत्व बुद्ध के उपदेश कला में दिखाई पड़ता है। बुद्ध जीवन संबंधी उपदेश दिया करते थे। ये उपदेश प्राप्तकर्ता के जीवन को सीधा प्रभावित करता था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अरस्तु के द्वारा दिया गया संचार प्रतिरूप कहीं न कहीं बुद्ध के संचार व्यवस्था से प्रभावित है। यहां प्राचीन संचार व्यवस्था में बुद्ध के संचार व्यवस्था को समझना कठिन नहीं है। अरस्तु इस संचार व्यवस्था को समझाने के लिए बहुत उपयोगी हो सकते हैं क्योंकि गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के १०० साल बाद ही अरस्तु के जन्म और उनके जीवन संबंधी साक्ष्य मिलते हैं। हालांकि उनके भौगोलिक क्षेत्र और भारत के क्षेत्र में बहुत अंतर हैं, लेकिन बुद्ध के ज्ञान से प्रभावित हो विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से दार्शनिक एवं ज्ञानार्जन करने के लिए लोग यहां आए और वापस जाते हुए बुद्ध के ज्ञान का प्रसार करते रहे। हम कह सकते हैं कि बुद्ध की संचार प्रक्रिया तत्कालीन संचार प्रक्रिया का विकसित

रूप था, इसीलिए उस संचारी प्रक्रिया का गहरा प्रभाव रहा और उपदेशों में दिए ज्ञान ने इस प्रभाव को और अधिक गहरा कर दिया। बाद में इसी प्रक्रिया को अलग अलग विद्वानों ने अपने तर्कों से विकसित किया।

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने यह जानना चाहा कि अरस्तु के द्वारा दिए सूचना कला के संबंध में साक्ष्य हैं एवं महात्मा बुद्ध के द्वारा दिए जाने वाले उपदेश कला के भी। इसके अलावा दोनों दार्शनिकों का जीवन के संबंध में गहरा ज्ञान है। दोनों ही उपदेशों के माध्यम से ज्ञान का प्रसार करते हैं। हालांकि यहां महात्मा बुद्ध का काल अरस्तु के काल से अधिक पुराना माना गया है। ऐसे में संचार की बात कि जाए तो क्या संचार को व्यवस्थित करने में महात्मा बुद्ध का स्थान अरस्तु के स्थान से पहले का है, शोधार्थी ने अपने पत्र में यही जानने का प्रयास किया है एवं अध्ययन के लिए अग्रसर हुआ है।

शोध पत्र का महत्व –

भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह बात सिद्ध मानी गयी है कि ग्रीस के अरस्तु, संचार के संबंध में अपने व्यक्तव्य प्रस्तुत करते हैं। इसके साथ ही यह भी सिद्ध है कि महात्मा बुद्ध उपदेशों के माध्यम से ज्ञान का प्रसार करते थे। यहां यह प्रश्न उठता है कि बौद्ध काल में जहां विज्ञान, समाज विज्ञान के विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी, वहां शिक्षा प्रदान करने की पद्धति क्या थी। ज्ञान एक जगह से दूसरी जगह कैसे प्रसारित होता था या कहा जाए एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे पहुंचाया जाता था। यदि यह पता लगाया जाए तो बौद्ध काल की संचार व्यवस्था को समझना आसाना होगा। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने यह पता लगाने के लिए अध्ययन किया। शोध पत्र का महत्व तब और महत्वपूर्ण हो जाता है, जबकि यह पता लगा कि महात्मा बुद्ध तात्कालीन महान संचारक हैं, क्योंकि उनके संचार करने की कला इतनी प्रबल होती थी विश्व के कोने कोने से लोग भारतवर्ष आए और उनके अनुयायी बन ज्ञान प्राप्त किया और संघ में शामिल हुए। शोध पत्र का महत्व इस तर्क पर भी आधारित है कि महात्मा बुद्ध के एक महान संचारक के रूप में उनका प्रस्तुतीकरण बहुत ही कम लेखनों में मिलता है।

शोध पत्र का उद्देश्य –

शोधार्थी ने शोध पत्र के अध्ययन को पूर्ण करने के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया है, जो इस प्रकार हैं –

- महात्मा बुद्ध की उपदेश कला में संचार कला का पता लगाना।
- संचार प्रतिरूप में 'प्रेषक' की भूमिका में महात्मा बुद्ध की पहचान का अध्ययन।

शोध पत्र के प्रश्न –

शोधार्थी ने शोध पत्र के अध्ययन को पूर्ण करने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों का निर्माण किया है, जो इस प्रकार हैं –

१. महात्मा बुद्ध की संचार कला क्या थी ?
२. क्या महात्मा बुद्ध की उपदेश कला ने संचार कला को विकसित किया ?
३. क्या उपदेशक के रूप में महात्मा बुद्ध एक जनसंचारक हैं ?

साहित्यिक समीक्षा –

शोधार्थी ने अपने शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए विभिन्न शोधों, पुस्तकों, पत्रों का अध्ययन किया। इसके अलावा विभिन्न विश्वविद्यालयों में पूर्ण किए गए ऐसे शोध जो बौद्ध काल पर अथवा बौद्ध धर्म अथवा महात्मा बुद्ध से संबंधित थे, उनका भी शोधार्थी ने अध्ययन किया। इनका विवरण संदर्भ सूची में दिया गया है।

प्राचीन महान विचारक एवं दार्शनिक अरस्तु –

अरस्तू का जन्म ३८४ ई०पू० हुआ था। वे एक ग्रीक दार्शनिक थे। उनके लेखन के घेरे में विचारों के सभी क्षेत्र शामिल है। वे विश्व के महान विचारकों में से एक थे। बताया जाता है कि पिता की मृत्यु हो जाने के बाद १७ वर्षीय अरस्तु को उनके परिवार ने

शिक्षा के लिए बौद्ध शिक्षा केंद्र एथेंस भेज दिया। वहां अरस्तु ने बीस वर्षों तक प्लेटो से शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा पूरी होने के बाद वे भी अध्यापन करने लगे। अरस्तु अपने शिष्यों को सुबह विस्तृत रूप से और शाम को आम जन को प्रवचन देते थे। वे स्वयं में भी सामाजिक जीवन के प्रश्नों की खोज करते रहते थे। अरस्तु ने कई ग्रथों की रचना की, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण हैं, निकोमेशियन एथिक्स, यूडेमियन एथिक्स, रेटॉरिक आदि। अरस्तु की शिक्षा प्रणाली भी उपदेशात्मक ही रही। मकदूनिया के बेटे को भी उन्होंने दीक्षा दी। मकदूनिया के राजा फिलिप के आग्रह पर अरस्तु उनके तेरह वर्षीय पुत्र को पढ़ाने लगे। एलेग्जेंडर के राजा बनने के बाद अरस्तु का काम खत्म हो गया और वो वापस एथेंस आ गये, यहां अरस्तु ने शिक्षा संस्थान प्लेटोनिक शुरू किया और प्लेटोवाद की स्थापना की।

अरस्तु का संचार प्रतिरूप –

ईसा से ३०० वर्ष पूर्व अरस्तु के द्वारा लिखित पुस्तक 'रेटॉरिक' में संचार को पहचाना जा सकता है। 'रेटॉरिक' का अर्थ होता है 'भाषण देने की कला। इसी कृति में ऐसे साक्ष्य मिले जिनमें संचार को ढूंढा जा सकता है। इसी कारण संचार के प्रतिरूप में अरस्तु का नाम सबसे पुराने समय में लिया जाता है। अरस्तु के भाषण देने की कला में पांच तत्वों का समावेश है। प्रेषक (भेजने वाला), संदेश (भाषण), प्राप्तकर्ता, प्रभाव और अवसर।

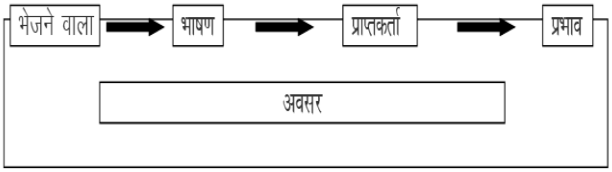

इसे विस्तार से समझे तो तत्कालीन समय में अरस्तु ने भाषण देने की कला को समझाया हालांकि वर्तमान में समझा जाए तो भाषण भी संचार करना ही है। लेकिन यहां पर विश्लेषण किया जाए तो हमें संचार प्रक्रिया का पूर्ण रूप लिखित रूप से नहीं मिलता। समय बीतने के साथ भाषण कला को संचार कला में विकसित किया। भाषण देने वाला प्रेषक माना गया और भाषण एक संदेश, जो भाषण को सुनेगा वह होगा प्राप्तकर्ता अर्थात जो संदेश को ग्रहण करने वाला है। इसके अलावा प्रभाव इसलिए कि हर भाषण का कुछ न कुछ प्रभाव होगा ही। २०वीं शताब्दी में संचार विद्धानों ने अरस्तु के संचार प्रतिरूप को गठित कर आसान शब्दों में समझाने योग्य बनाया।

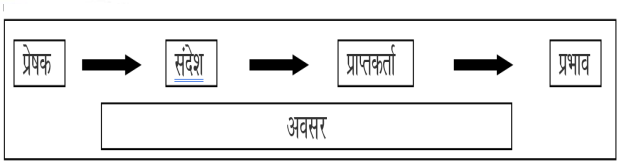

अरस्तू के संचार की प्रक्रिया रेखीय है। रेखीय का अर्थ है एक सीधी लाईन में चलना। प्रेषक अपने संदेश को श्रोता को भेजता है, जिसका उस पर एक प्रभाव उत्पन्न होता है। हर अवसर के लिए संदेश अलग-अलग होते हैं। अरस्तू मानते हैं कि भाषण देने का कारण होता है श्रोता पर प्रभाव उत्पन्न करना। यही बात संचार में स्वीकार की गयी। प्रेषक (भाषण देने वाला) विभिन्न अवसरों को ढूंढता है और संदेश (भाषण) देता है ताकि प्रभाव अधिक हो सके। अरस्तु ने कुछ ऐसे बिन्दुओं का प्रतिपादन किया है जिसमें बताया गया है कि विभिन्न अवसरों पर संदेश किस प्रकार से तैयार किए जाएं। अपने कार्य में अरस्तु ने 'पैथोस', 'इथोस्' और 'लोगोस्' की चर्चा की। पैथोस् का शाब्दिक अर्थ है दुःख। अरस्तु के अनुसार यदि संदेश इस तरह से तैयार किये जायें, जिससे कि श्रोता के मन में दुःख या इससे संबधित भाव उत्पन्न हो सके तो श्रोता के मस्तिष्क पर प्रभाव डाला जा सकता है। 'इथोस्' का शाब्दिक अर्थ है विश्वसनीयता। अरस्तु के अनुसार जब श्रोता का विश्वास प्रेषक पर होगा तो संदेश का प्रभाव श्रोता पर अधिक होगा। 'लोगोस्' का शाब्दिक अर्थ है तर्क। अरस्तू के अनुसार प्रेषक का संदेश तर्क से भरपूर होना चाहिए। इससे संदेश का प्रभाव का श्रोता पर अधिक पड़ता है।

विभिन्न मतों, तर्कों और विचारों को देखें तो अरस्तु प्राचीन संचारक हैं। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि उन्होंने संचार प्रक्रिया प्राचीन काल में ही तैयार कर ली थी। अरस्तु अपने समय में अध्यापन के लिए बाहर भी गए और शिक्षा भी प्राप्त की। इसके अलावा एक शिक्षक के रूप में उन्होंने ज्ञान का प्रसार भी किया। संचार के परिप्रेक्ष्य में उनका योगदान महत्वपूर्ण है और यह हमेशा रहेगा। कुछ लोग प्लेटो को भी संचार प्रक्रिया से जोड़कर देखते हैं। साक्ष्यों की कमी होने के कारण स्वीकार करना कठिन हो जाता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ऐसा हो नहीं सकता। यदि ध्यान दिया जाए तो भारतीय संदर्भ में हमें तथागत बुद्ध मिलते हैं, जो अरस्तु से १०० वर्षों पहले हैं और एक महान दार्शनिक एवं गुरू के रूप में स्थापित हैं, जिन्होंने शिक्षा संस्थान खोलकर सभी को शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान किया। समय के साथ साथ भारतवर्ष की धरती पर कई शासकों के आक्रमण ने बौद्ध काल के कई संग्रह नष्ट कर दिए गए, लेकिन फिर भी जो संरक्षित हैं, उनसे कई जानकारियां मिलती हैं।

महात्मा बुद्ध और बौद्ध धर्म –

गौतम बुद्ध के जन्म में कई साक्ष्य विभिन्नता को दर्शाते हैं जो अंतिम रूप को प्राप्त नहीं हो सका है, लेकिन सर्वाधिक मान्य है कि बुद्ध का जन्म ५६३ ई०पू० कपितलवस्तु के निकट लुम्बिनी नाकम ग्राम में हुआ था। वर्तमान में यह नेपाल में स्थित है। मोह-माया को त्याग कर वे २९ वर्ष की आयु में घर से निकल गए। बोध गया में उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और उसके बाद उन्होंने उपदेश द्वारा जागृति लाना शुरू किया। बौद्ध धर्म के चार सिद्धान्त हैं- जिसमें पहला दुख, दूसरा दुख का कारण, तीसरा दुख निरोध, और चौथा दुख निरोधगामिनी प्रतिपदा। पहले सिद्धान्त के अनुसार संसार में सर्वत्र दुख है। जन्म, मरण, बुढ़ापा और रोग दुख है। प्रिय का वियोग और अप्रिय का संयोग भी दुख है। इच्छित वस्तु की प्राप्ति न होना भी दुख है। संसार में हर प्राणि दुख से पीड़ित है। दूसरे सिद्धान्त में उन्होंने दुख के कारणों को बताया, जिसमें तृष्णा, अतृप्त इच्छा आदि दुख के कारण हैं। तृष्णा से अहंकार, ममता, राग, द्वेष, कलह आदि से दुख उत्पन्न होते हैं। तीसरे सिद्धान्त में दुख निरोध के बारे में बताया। महात्मा बुद्ध के अनुसार, रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान के निरोध को ही दुख का निरोध है। तृष्णा के विनाश से ही दुख का निवारण संभव है। मनुष्य जीवन-मरण से छुटकारा पा सकता है। चौथे सिद्धान्त में महात्मा बुद्ध कहते हैं कि यज्ञ, बलि, देवताओं की पूजा, प्रार्थना, मंत्रोच्चारण तथा तपस्या से निर्वाण की प्राप्ति संभाव नहीं है। कठोर तपस्या द्वारा शरीर को कष्ट देने से भी निवाण की प्राप्ति नहीं होती। शाश्वत सुख की प्राप्ति हेतु मध्यम मार्ग को अपनाना चाहिए। मध्य मार्ग से उनका मतलब था मनुष्य को न तो अधिक वासना में लिप्त होना चाहिए और न शरीर को अधिक कष्ट देना चाहिए।

तृष्णा और अन्य दूषित संस्कारों के निवारण हेतु उन्होंने अष्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया, जिसमें आठ मार्ग बताए हैं। ये इस प्रकार हैं- पहला मार्ग, सम्यक दृष्टि, जिसमें उन्होंने कहा कि मनुष्य में सत्य-असत्य को पहचानने की शक्ति होनी चाहिए और पाप-पुण्य एवं सदाचार दुराचार में विभेद करने का समर्थ्य होना चाहिए। दूसरा मार्ग, सम्यक संकल्प, जिसमें उन्होंने कहा कि संकल्प से लिप्सा और आसक्ति से छुटकारा मिलता है और हृदय में सबके लिए प्रेम का भाव जगता है। तीसरा मार्ग सम्यक वाक् है, जिसमें वाक् में भाषण अथवा बोलना माना जा सकता है। वाक् का तात्पर्य सत्य, विनम्रता तथा मृदुता से ओत-प्रोत वाणी से है। चौथा मार्ग सम्यक कर्मात है जिसमें कहा गया कि प्रत्येक व्यक्ति को अहिंसा तथा सदाचार के नियमों का पालन करना चाहिए। ऐसा काम करना चाहिए जिससे दूसरों को लाभ हो। पांचवां मार्ग सम्यक आजीवन हैं, जिसमें कहा गया जीवन के लिए अपवित्र तथा भ्रष्ट साधनों का उपयोग नहीं किया जाना

चाहिए। छठवां मार्ग सम्यक व्यायाम है, जिमसें महात्मा बुद्ध ने बताया कि बुरे विचारों से छुटकारा पाने के लिए मानसिक अभ्यास करना चाहिए तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान हेतु प्रयत्न करना चाहिए। सातवां मार्ग है सम्यक स्मृति, जिसमें मनुष्य को सावधानी रखने को कहा गया है कि मनुष्य को सदैव याद रखना चाहिए कि उनके सभी कार्य विवेकपूर्ण एवं सावधानी से हों। स्मृति चार रूपों में बतायी गयी है, जो इस प्रकार हैं- प्रथम, कायानुपश्यना अर्थात शरीर के प्रत्येक संस्कार तथा चेतना के प्रति जागरूक रहना। द्वितीय, वेदानुपश्यना अर्थात सुख-दुख की अनुभूतियों के प्रति सजग रहना। तृतीय चितानुपश्यना अर्थात चित के राग द्वेष को पहचानना। चतुर्थ धर्मानुपश्यना अर्थात शरीर, मन और वचन की चेष्टा को समझना। आठवां मार्ग सम्यक समाधि है, जिसमें शारीरिक बंधनों और मानसिक लगावों से उत्पन्न बुराइयों को दूर करने को कहा गया है।

महात्मा बुद्ध यज्ञ, अनुष्ठान धार्मिक आडंबर का विरोध करते थे। जाति-पाति, वर्ण, ऊंच-नीच भावना आदि की निंदा की है। बौद्ध धर्म का मार्ग हर जाति के लोगों के लिए खुला है। तथागत बुद्ध का मत था कि पुनर्जन्म आत्मा का नहीं वरन् अनित्य अहंकार का होता है। महात्मा बुद्ध का कर्म को प्रधानता देते हैं। उनके उपदेशों में सिद्धान्तों में कर्म की झलक दिखाई देती है। बुद्ध कर्म को प्रधान मानते थे। महात्मा बुद्ध का मत है कि तुष्णा और वासना नष्ट हो जाती है तो उसे निर्वाण प्राप्त होता है।

जैसे-जैसे समय बीता बौद्ध धर्म में दो सम्प्रदाय हो गए। पहला हीनयान और दूसरा महायान। हीनयान में बौध धर्म का मूलरूप मिलता है। समें 'कम्म' (कर्म) और 'धम्म' (धर्म) को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसमें मोक्ष की प्राप्ति को ही लोगों का प्रमुख लक्ष्य माना गया है। ईश्वर, यज्ञ, आडंबर आदि का विरोध है। हीनयान में मुख्य ग्रंथ त्रिपिटक है। हीनयान का प्रसार देश विदेश में बहुत हुआ। श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड आदि देशों में यह आज भी देखने को मिलता है। महायान में मूर्ति पूजा शामिल हो गयी।

बौद्ध धर्म ने समाज के एक विशेष वर्ग का शिक्षा व ज्ञान प्राप्ति पर चले आ रहे वंशानुगत एकाधिकार को समाप्त कर दिया और जनमानस में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा दिया। नालन्दा विहार तत्कालीन समय में बौद्ध कालीन शिक्षा का गौरव था।

शिक्षा का उद्देश्य -

बौद्ध काल में आध्यात्मिक विकास पर अधिक जोर न देकर नैतिकता अथवा शील पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इसमें नैतिक चरित्र, गुणों पर ध्यान दिया जाता है। मधुरस्वभाव, अच्छा आचरण, निष्ठा, कर्तव्य-पालन, पवित्रता जैसे गुण निहित हैं। बौद्ध धर्म में शिक्षा के कुछ उद्देश्य निर्धारित किए गए। पहला नैतिक चरित्र का निर्माण करना, दूसरा बौद्ध धर्म का प्रसार करना, तीसरा व्यक्तित्व का विकास करना, चौथा जीवन के लिए तैयार रहना।

छात्र बौद्ध धर्म शास्त्रों का अध्ययन करते थे। लेकिन साथ ही वे जीवन संबंधी शिक्षा भी ग्रहण करते थे। मौर्य काल, गुप्त काल को भारतवर्ष में स्वणयुग माना जाता है। इन कालों में साहित्य, दर्शन, कला, व्यापार, कृषि, सैनिक आदि क्षेत्रों में शिक्षण किया जाता था। शिक्षा दो भागों में थी। प्रारम्भिक शिक्षा और उच्च शिक्षा। प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत लिखना-पढ़ना और गणित सिखाया जाता था। उच्च शिक्षा में धर्म, दर्शन, आयुर्वेद, शिल्प कला, सैनिक शिक्षा आदि दी जाती थी। शिष्य गुरू से पाठ सुनता था, याद करता था। शिक्षण कार्य प्रायः मौखिक होता था और वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर, देशाटन से छात्र सीखते थे। शिल्पकला, चिकित्सा शास्त्र, सैनिक शिक्षा में प्रयोग विधि का भी उपयोग किया जाता था।

शिक्षा के लिए बालकों का मठों में प्रवेश हेतु प्रव्रज्या संस्कार होता था। प्रव्रज्या का शाब्दिक अर्थ है 'बाहर जाना'। अतः प्रव्रज्या संस्कार से तात्पर्य है कि शिक्षा के लिए घर से बाहर जाना। मठ के सबसे बड़े

भिक्षु ही सामान्यतः इस संस्कार को सम्पन्न करवाते थे। प्रव्रज्या में बालक सिर के बाल मुड़वाकर तथा पीले वस्त्र पहनकर 'शरण-त्रयी' लेता था, अर्थात वह उच्चारण करता था, 'बुद्धं शरणम् गच्छामि, धम्मं शरणम् गच्छामि, संघं शरणम् गच्छामि। प्रव्रज्या आठ वर्ष के बालक को दी जाती थी। प्रव्रज्या के बाद बालक 'सामनेर' कहलाता था और उसे मठ में रहना होता था। यहां जाति का कोई बंधन नहीं था।

छात्र अध्ययन के लिए सुबह उठकर नित्य कर्म, स्नान आदि कर तैयार होते, गुरू छात्रों को प्रेरित करते। छात्र भिक्षाटन करते थे। सामनेर में दस आदेशों का पालन करना पड़ता था। इन्हें 'दस सिक्खा पदानि' अर्थात दस शिक्षा पद कहते थे। महात्मा बुद्ध ने अपने अनुयायियों के लिए आचार विधान भी तैयार किया जिसमें दस नैतिक उपदेश दिए। १. सत्य बोलना, २. अहिंसा का पालन, ३. सत आहार करना, ४. मद्यपान निषेध, ५. शुद्ध आचरण करना, ६. शृंगार न करना, ७ नृत्य-गान का त्याग, ८ बिना दिए वस्तु को न लेना, ९ निन्दा न करना, १० कामिनी कंचन का त्याग।

वेदिक काल में गुरू के व्यक्तिगत आश्रम में शिक्षा देने की प्रथा थी जबकि बौद्ध धर्म में व्यक्तिगत अध्यापक होते थे एवं जिनके आश्रम संघबद्ध हो गये, जिन्हें 'बौद्ध संघ' या बौद्ध मठ या बौद्ध विहार कहा जाता था। बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्थान स्थान पर बौद्ध मठ स्थापित हो गए थे। बॉद्ध मठों में धार्मिक, विद्यालयी तथा व्यावहारिक शिक्षा दी जाती थी। छात्र-अध्यापक एक ही प्रांगण में साथ रहते थे। बौद्ध मठों में वातावरण वैदिक काल के आश्रमों की अपेक्षा अधिक सामाजिक था, क्योंकि शैक्षिक स्वाभाविकता ने होकर एक प्रकार की कृत्रिमता आ गई थी। मठ प्रशासन के नियमों का पालन छात्र-अध्यापक दोनों को करना होता था। यहां छात्र १२ वर्ष तक अध्ययन किया करते थे। नालन्दा, तक्षशिला, आदन्तपुरी, बलभी, विक्रमशिला, नदिया, मिथिला और जगद्दला बौद्ध काल की प्रमुख शिक्षा संस्थाएं थीं।

बौद्ध धर्म में १२ वर्ष की शिक्षा पूर्ण होने पर दो मार्ग होते थे। पहला ग्रहस्थ जीवन में दूसरा और दूसरा आजीवन भिक्षुक रहकर बौद्ध धर्म का प्रचार करना। जो छात्र जीवन भर भिक्षुक बनते उनका उपसम्पदा संस्कार होता था। इसके लिए 'सामनेर' भिक्षुओं का वेश धारण करके, हाथ में कमण्डल और कंधों पर चीवर लेकर अन्य भिक्षुओं को प्रणाम करके बैठ जाता था। सभी भिक्षुक जनतांत्रिक ढंग से बहुमत के आधार पर यह निर्णय लेते कि वह उपसम्पदा का अधिकारी है या नहीं। उपसम्पदा प्राप्त भिक्षुक बौद्ध मठ का स्थायी सदस्य बना जाता है।

प्राचीन महान जनसंचारक महात्मा बुद्ध -

यदि संचार के परिप्रेक्ष्य में महात्मा बुद्ध को देखा जाए तो महात्मा बुद्ध एक महान संचारक रहे। उन्होंने संचार की नई कला को व्यवस्थित किया जिसका विकास बाद में आए विभिन्न दार्शनिकों और विद्वानों के करकमलों से हुआ। बुद्ध का संचार उपदेशात्मक है जिसमें उपदेशों के माध्यम से संदेशों को प्रेषण किया गया। बुद्ध या उनके अनुयायियों को प्रेषक संचारकर्ता की संज्ञा देना किसी भी कोण से गलत नहीं होगा। संचार में प्रेषक संदेश प्रेषित करने वाला होता, इसी प्रकार महात्मा बुद्ध अथवा उनके शिष्यों एवं अनुयायियों ने भी जीवन संबंधी एवं दुखों के निवारण संबधी संदेशों का प्रेषण किया एवं पैदल चल चलकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर संदेशों का प्रेषण किया। संचार में उपदेश/शों को संदेश कहा जाना चाहिए, यही स्वीकार्य भी होगा। इसी प्रकार उपदेशों को ग्रहण करने वाला एवं अपने जीवन में दुःख, तृष्णा, इच्छाओं के कारणों को जानने वाला एवं निवारण के लिए अग्रसर होने वाले जनों को संचार में प्रापक अथवा प्राप्तकर्ता कहना चाहिए। क्योंकि संचार प्रक्रिया में प्रापक वह है जो संचारक द्वारा प्रेषित किए गए संदेश को ग्रहण करता है एवं संदेशों का उस पर

प्रभाव पड़ता है। आधुनिक काल में विद्वानों ने प्रतिपुष्टि को भी संचार प्रक्रिया में संकलित किया, जो कि महत्वपूर्ण तत्व बना और संचार विकास को नये आयाम की ओर अग्रसर किया। बुद्ध के द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान को प्रसारित करना एक कठिन काम था, जिसे स्वयं बुद्ध ने बड़ा आसान बना दिया।

बौद्ध काल में व्यवस्थित संचार –

बौद्ध काल में संचार व्यवस्था बहुत ही व्यस्थित रूप होना शुरू हुई। बौद्ध काल में उपदेशों की नई परंपरा और ज्ञान प्रसार की नई व्यवस्था, जो गुरूकुल से हटकर मठों और संस्थान हो गए, ने संचार को व्यवस्थित और सुचारू किया। बौद्ध काल में ही प्रेषक की भूमिका प्रमुखता से उभर के आई और श्रौता भी महत्वपूर्ण हुआ, क्योंकि ज्ञान प्रसार की पद्धति में परिवर्तन आया। बौद्ध काल में बौद्ध धर्म की प्रसिद्धि नई संचार नीति और उपदेशों अर्थात संदेशों के प्रभाव से हुई। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि बौद्ध धर्म की शिक्षा प्रणाली विश्व भर में अपनाई गई। इसी आधार पर संस्थानों का निर्माण होने लगा। बाद में यही संचार पद्धति विकास करने लगी और अरस्तु ने इसी व्यवस्था को भाषण देने की प्रक्रिया में शामिल किया। ज्ञान प्रसार अथवा प्राप्ति में संचार स्वयं उपस्थित होता है ऐसे में विशेष रूप से बौद्ध काल में संचार को पृथक नहीं किया गया होगा क्योंकि ऐसा करना उस समय शायद आवश्यक न रहा हो, क्योंकि तर्कवादी ज्ञान की शुरूआत ही उसी कालखंड में हुई तो संचार का पृथकीकरण ज्ञान के प्रभाव को प्रभावित ही करती।

गौतम बुद्ध के संचार की संकल्पना –

यदि बौद्ध काल की संचार प्रणाली को एक प्रतिरूप में व्यवस्थित करना चाहें तो यह कठिन काम न होगा। क्योंकि बौद्ध मठों के ज्ञान का स्वरूप तर्कवादी, व्यवहारवादी और उपदेशात्मक था जो छात्र, जन के मानसपटल पर प्रभाव छोड़ता था, और एक बात और शामिल करना चाहिए जो संचार के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, वह यह कि जिस तरह से संचार सभी के लिए है उसी तरह बौध काल में दी जाने वाली शिक्षा भी सभी के लिए थी, (अपराधी, व्यभिचारी आदि को छोड़कर)।

बौद्ध काल की संचार प्रणाली को प्रतिरूप में रखने के लिए हमें उपदेशात्मक नीति पर ध्यान देना चाहिए। इसमें उपदेशक 'प्रेषक' की भूमिका में होगा, उपदेशक के उपदेश 'संदेश' के रूप में और सुनने एवं उपदेश प्राप्त करने वाले 'श्रोता'। बौद्ध काल की संचार प्रणाली रेखीय है, लेकिन तर्कवादी ज्ञान प्रसार पर ध्यान दें तो संचार प्रणाली अरेखीय भी मानी जा सकती है, लेकिन यहां एक तर्क और प्रस्तुत करना आवश्यक होगा कि महात्मा बुद्ध के संदेश अर्थात उपदेश में तर्कवादिता है, लेकिन यह मनुष्य को समझने और सोचने पर जोर देता है न कि बहस करने पर। ऐसे में संचार प्रणाली को रेखीय स्वीकार करना तर्क संगत होना चाहिए। इसे प्रतिरूप में इस प्रकार समझ सकते हैं–

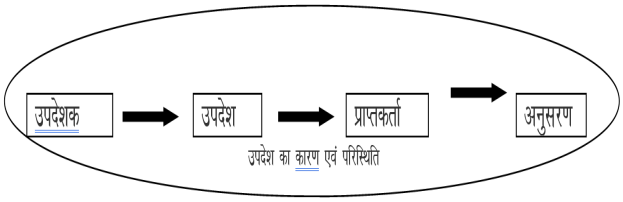

प्रस्तुत प्रतिरूप हम वर्तमान संचार प्रणाली में परिवर्तित करें तो इसे समझना आसान हो जाएगा। वर्तमान में इस प्रतिरूप को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं –

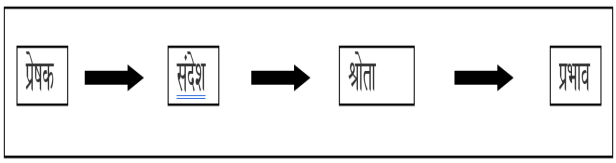

वर्तमान की संचार व्यवस्था और बौद्ध काल की उपदेशात्मक शैली में अधिक परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता। ऐसे में यह स्वीकार करना अमान्य नहीं होगा कि बौद्ध काल की उपदेशात्मक शैली में तत्कालीन विकसित संचार प्रणाली छुपी हुई थी।

विकसित जन संचार व्यवस्था में बौद्ध काल का योगदान –

बौद्ध काल में जब महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया, तो उस ज्ञान का प्रसार करने लगे और भ्रमण पद्धति भी अपनाई ताकि ज्ञान का प्रसार अधिक से अधिक किया जा सके एवं जनमानस पर आडम्बरों एवं अज्ञानता से बाहर निकाला जा सके। बौद्ध धर्म की स्थापना एवं उपदेशात्मक शैली ने बौद्ध धर्म को विश्वभर में प्रसारित कर दिया, साथ ही संचार की नई व्यवस्था को भी प्रस्तुत किया। इसी संचार व्यवस्था ने कालांतर में विकास किया और अन्य विद्वानों ने संचार को स्नेह स्नेह व्यवस्थित और विकसित किया।

वर्तमान में बौद्ध कालीन संचार व्यवस्था की उपयोगिता एवं महत्व –

वर्तमान में सर्वाधिक स्वीकार्य संचार व्यवस्था बौद्ध कालीन संचार प्रणाली से इतर दिखाई नहीं पड़ती, ऐसे में यदि वर्तमान समय की बात की जाए तो बौद्ध काल की संचार प्रणाली आज भी महत्व रखती है। इसके कई तर्क दिए जा सकते हैं, लेकिन यदि कुछ महत्वपूर्ण तकों की बात की जाए तो उसमें शिक्षा नीति अधिक महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार से आज विभिन्न विषयों शिक्षा प्रदान की जाती है, उसी तरह से बौद्ध काल में हुआ करता था। बल्कि यह कहना चाहिए कि बौद्ध काल की शिक्षा नीति को ही और विकसित करके हम आज विषयों और उपविषयों को पृथक रूप से पढ़ रहे हैं। महात्मा बुद्ध अपने उपदेशों में विभिन्न समस्याओं और कारणों पर तर्क प्रस्तुत कर ज्ञान देते थे और दुःख का कारण बताते थे। वर्तमान में भी संचार में हम व्यक्ति के जीवन से संबंधित ही ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं। बौद्ध काल में हमें तकनीकी शिक्षा देखने को मिलती है और आज तकनीकी विकास की ओर ही बढ़ रही है। ऐसे में बौद्ध काल की संचार प्रणाली जबकि अधिक परिवर्तित ही नहीं हुई है तो स्वयं ही तर्क सिद्ध हो जाता है कि वर्तमान काल में बौद्ध काल की संचार प्रणाली महत्व रखती है।

निष्कर्ष –

दुःख के संदर्भ में सत्य की व्याख्या करते हुए महात्मा बुद्ध कहते हैं, ' जन्म भी दुःख है, बुढ़ापा भी दुःख है, शौक मन की खिन्नता, हेरानगी दुःख है। अप्रिय से संयोग, प्रिय से वियोग भी दुःख है। इच्छित वस्तु का प्राप्त न होना दुःख है ...'। महात्मा बुद्ध के उपदेशों ने जनमानस पर गहरी छाप छोड़ी क्योंकि उनका ज्ञान सत्य की ओर ले जाने वाला और तर्कवादी के साथ जीवन संबंधी रहा। उन्होंने कर्म सिद्धान्त दिया, जिसमें उन्होंने मुनष्य के कर्म को प्रधानता दी और कहा मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसी के अनुसार उसका भविष्य होता है। यदि हम संचार की बात करें तो सफल संचार उसी को कहा जाता है जिसमें प्रेषक का संदेश प्राप्तकर्ता को इस प्रकार प्राप्त हो कि उस संदेश का प्रभाव प्राप्तकर्ता पर पड़ सके। यही सूत्र बौद्ध काल में दिखाई पड़ता है, जिसमें तथागत बुद्ध के संदेशों अथवा उपदेशों का प्रत्यक्ष प्रभाव जनमानस अथवा श्रोता पर पड़ा और वे उनके अनुयायी होते गए। कालांतर में बौद्ध धर्म की स्थापना ने महात्मा बुद्ध के प्रभाव को बढ़ाया ही। हालांकि विभिन्न परिस्थितियों में बौद्ध धर्म पर प्रभाव पड़ा। लेकिन संचार के विषय में कहा जाए तो संचार बौद्ध काल में व्यवस्थित हो चला और आज का संचारिक स्वरूप बौद्ध काल के संचारिक स्वरूप से मेल खाता है और आज की संचार प्रणाली बौद्ध काल की संचार प्रणाली से प्रभावित है और आज उसका विकसित रूप देखने को मिल रहा है। अभी ऐतिहासिक पक्ष की बात की जाए तो साक्ष्यों के द्वारा इस तर्क को और अधिक प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। अंतरविषय अध्ययनों से उपरोक्त अध्ययन को और अधिक बल मिल सकता है और बौद्ध कालीन संचार प्रणाली को और अधिक तर्कवादी सूत्रों से सिद्ध किया जा सकता है।

संदर्भ सूची –

1. Encyclopedia of Buddhis, Editor in chief Robert E, Buswell, Jr., Macmillan, Reference, USA, Thomson, Gale. 2004

2. Encyclopedia of World Religions, Encyclopedia of Buddhism, Edward A. Irons, J. Gordon Melton, Series Editor, Facts on File publishing, New York. 2008
3. Buddhism in India, Challenging Brahmanism and Caste, Gail Omvedt, Sage Publications, New Delhi. 2003
4. Introduction To the History of Indian Buddhism, Eugene Burnouf, Translated by Katia Buffetrille and Donald S. Lopez Jr., Published by University of Chicago Press. Chicago & London. 2010
5. The Buddhism Primer : An Introduction to Buddhism by Dhammasaavaka Rober John Mestre, published by Lulu. 2005
6. The Sociology of Early Buddhism, Greg Bailey and Ian Mabbett, Cambridge University Press. 2003
7. The Buddhist Religion : A Historical Introduction, Fourth Edition, Richard H. Robinson, published by Wadsworth Publishing Company, Belmont, CA. 1997
8. Aristotle, The Art of Rhetoric, Transaltion and index by W. Rhys Roberts, Megaphone eBooks. 2008
9. The Art of Rhetoric in the Roman World: 300 B.C. – A.D. 300 , George A. Kennedy, Published by princeton University Press. USA. 1972
10. Aristotle, The Art of Rhetoric, Translated with an Introdustion and notes by H.C. Lawson-Tancred, Published by penguin Books. 2004
11. https://helpfulprofessor.com/communication-models/
12. http://www.newswriters.in
13. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/
14. http://hdl.handle.net/10603/301076
15. http://hdl.handle.net/10603/179513
16. http://hdl.handle.net/10603/179874
17. http://hdl.handle.net/10603/182011
18. http://hdl.handle.net/10603/300875
19. http://hdl.handle.net/10603/239531
20. http://hdl.handle.net/10603/264821
21. http://hdl.handle.net/10603/232381
22. http://hdl.handle.net/10603/10747
23. http://hdl.handle.net/10603/299624
24. https://www.biography.com/scholar/aristotle
25. https://en.wikipedia.org/wiki/Aristotle#
26. https://www.communicationtheory.org

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com